गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''अंध विश्वास सत्य और तथ्य'' का संक्षिप्त सार–संक्षेप

गोपाल राजू मानस श्री

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाइन, रुड़की – 247667
फोन नं– 60111555
साइट : **www.astrotantra4u.com**

सहवास का समय

पृथ्वी पर जितने भी जीव–जन्तु हैं उसमें से सूअर तथा मनुष्य को छोड़कर प्रत्येक के सहवास का एक समय निर्धारित है। इससे स्पष्ट है कि सहवास के मामले में व्यक्ति जानवरों से भी बदतर है। किन मास अथवा दिनो में व्यक्ति सहवास करे और किन शुभ दिनों में वह इसे त्याग दे, यह धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है।

शात्रकार सहवास के जो नियम बना गए थे आज हम पाते हैं कि वह पूर्णतया वैज्ञानिक हैं। यदि संयम से इस नियमों का पालना किया जाए तो व्यक्ति दीर्घायु, कान्तिवान, बौद्धिक होने के साथ–साथ स्वस्थ और परोपकारी सन्तान को भी जन्म देता है।

लाखों–करोड़ों प्रत्यक्ष प्रमाणों से यह बात आज अनुभव में आ चुकी है कि संयम, उचित समय और सात्विक मनोभाव से पुत्र अथवा पुत्री की कामना हेतु यदि पति–पत्नी सहवास करें तो उसी भावना के अनुकूल स्वास्थ्य, कान्तिवान, बुद्धिवान अथवा कहें कि सर्वगुण सम्पन्न सन्तान की प्राप्ति होती है।

कामुकता, असमय और अश्लील अथवा कुविचारों और कलुषित भावनाओं को लेकर किए गए सहवास से विकृत, मूर्ख, अस्वस्थ, कानी, कुकलंकी सन्तान जन्म लेती है।

स्त्री–पुरुष के विवाह के समय भी उन्हें शिक्षा दी जाती है कि यह विवाह विषय भोग की तृप्ति के लिए ही नहीं है, यह तो पवित्र और महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया एक पवित्र गठबन्धन है।

ध्यान से मनन कीजिए कि स्त्री मात्र विषय भोग की पूर्ति करने का साधन नहीं है। वह तो प्रेम, दया, माया, कोमलता, ममत्व और संयम की देवी है। विषय भोग के कामान्ध पुरुष यह तक नहीं देखते कि गर्भाधान के लिए स्त्री तैयार है भी अथवा नहीं। वह चाहे अस्वस्थ ही क्यों न हो, कितनी ही मानसिक प्रताड़नाओं से पीड़ित हो, मानसिक व शारीरिक रूप से तैयार न हो तो भी पुरुष अपनी कामना पूर्ति हेतु सहवास कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में हुए गर्भाधान वाली भावी सन्तान कैसी होती है यह बौद्धिक पाठक स्वयं ही अनुमान लगा लें। यहाँ तक देखा गया है कि ऋतुकाल तक में कामी व्यक्ति सहवास करने से नहीं चूकते।

प्रभु ने व्यक्ति को बुद्धि का धनी बनाया है। इसके बाद भी वह अपना अच्छा–बुरा नहीं सोच पाता। जानवरों में बुद्धि का अभाव है। इसके बाद भी अपनी घ्राण भाक्ति के आधार पर वह यह अनुमान लगा लेते है कि उनका साथी सहवास के लिए तैयार है भी अथवा नहीं। उचित समय में वह स्वयं ही अपनी भाव–भंगिमा अथवा शब्द से साथी को सहवास के लिये निमन्त्रण देते हैं। इसमें स्वीकृति भी है, इसमें आकर्षण भी है। इसका आनन्द ही अलग है।

भारतीय संस्कृति में पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी तथा कृष्ण और शुक्ल पक्ष दोनों की चतुर्दशी, अष्टमी आदि को सहवास वर्जित माना गया है। इनके पीछे भी कुछ न

कुछ आधार अवश्य रहा होगा। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमने इन मान्यताओं के पीछे छिपे कारणों को जानने का कभी प्रयास ही नहों किया।

पूर्णिमा और अमावस्या तथा अष्टमी को चन्द्रमा, सूर्य तथा पृथ्वी एक रेखीय स्थिति में आ जाते हैं। गुरुत्वाकर्षण के कारण उनका परस्पर आकर्षण इस स्थिति में अन्य दिनों की तुलना में अधिक हो जाता है। सौर–मण्डल की इस स्थिति के कारण व्यक्ति की उत्तेजना, रक्त चाप सामान्य न होकर पहले से ही बढ़ी रहती है। दूसरी ओर सूर्य और चन्द्रमा की उन स्थितियों में जबकि वह एक दूसरे से समकोण बना रह होते हैं, उनकी गुरुत्वाकर्शण शक्ति म संघर्षण हो रहा होता है। इन स्थितियों में हमारा शरीर रस अर्थात् जल प्रधान होने क कारण ठीक उसी प्रकार से प्रभावित होता है जैसे की समुद्र। विभिन्न तिथियों में ज्वार–भाटे के रूप में समुद्र में हलचल सर्वविदित है ही। इसी कारणवश पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी (कृष्ण व शुक्ल पक्ष) एवं अष्टमी को सहवास वर्जित है।

प्रकृति प्रदत्त इन नियमों के विरुद्ध सहवास करने से शरीर में दुर्बलता आने के कारण शरीर का ह्रास होने लगता है, ऐसा इसलिए कहा जाता है उक्त वैज्ञानिक कारणों के संदर्भ में शारीरिक ऊर्जा की क्षति अत्यधिक मात्रा में होती है। इसलिए इन तिथियों में सहवास के लिए मना किया जाता है।

गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''अंध विश्वास सत्य और तथ्य'' का संक्षिप्त सार–संक्षेप गोपाल राजू रुड़कवी

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाइन, रुड़की – 247667
फोन नं– 60111555

साइट : **www.astrotantra4u.com**